'धर्मशास्त्र का इतिहास'

शब्दानुक्रमणिका

भारतरत्न, महामहोपाध्याय, डॉ० पाण्डुरंग वामन काणे

हिन्दी समिति

उत्तर प्रदेश शासन

महात्मा गांधी मार्ग, लखनऊ

हिन्दी समिति ग्रन्थमाला :: २२०

'धर्मशास्त्र का इतिहास'

भारतरत्न, महामहोपाध्याय, डॉ० पाण्डुरंग वामन काणे

शब्दानुक्रमणिका

उत्तर प्रदेश शासन
'राजर्षि पुरुषोत्तमदास टण्डन हिन्दी भवन'
महात्मा गांधी मार्ग, लखनऊ

धर्मशास्त्र का इतिहास

[शब्दानुक्रमणिका]

● प्रथम संस्करण : १९७४

● मूल्य
ढाई रुपये

● मुद्रक
सेण्ट्रल प्रेस, लखनऊ

प्रकाशक की ओर से

● ● ●

हमें 'धर्मशास्त्र का इतिहास' की 'शब्दानुक्रमणिका' प्रस्तुत करते समय हर्ष का अनुभव हो रहा है। इस बात का भी सुख और संतोष है कि हम इस महान् ग्रंथ का पाँच खंडों में अनुवाद प्रकाशित करने में समर्थ हुए हैं, और इस प्रकार हिन्दी वाङ्मय को एक आवश्यकीय ग्रंथ से समलंकृत करने का सफल प्रयत्न हुआ है।

'धर्मशास्त्र का इतिहास' एक राष्ट्रीय ग्रंथ है, जो हमारे भारतीय जीवन और संस्कृति के अनेकानेक प्रश्नों और उपलब्धियों का निर्देश करता है। इस ग्रंथ में लेखक ने धर्म, धर्मशास्त्र, जाति, वर्ण और व्यक्ति के कर्त्तव्य, अधिकार, संस्कार, आचार-विचार, यज्ञ, दान, प्रतिष्ठा, व्यवहार, तीर्थ, व्रत, काल, उत्सव आदि का विवेचन करते हुए सामाजिक और सांस्कृतिक विवरण देने का उपक्रम किया है। इस ग्रंथ की महत्ता और उपादेयता इस बात से भी परिज्ञात होती है कि इसमें वेद, उपनिषद्, स्मृति, पुराण, रामायण, महाभारत आदि ग्रंथों से आवश्यक संकेत-सूत्र और संदर्भ एकत्र किये गये हैं। इस कृति के रूप में विश्वविश्रुत विद्वान् लेखक भारतरत्न महा-महोपाध्याय डॉ० पाण्डुरंग वामन काणे ने जो महनीय और गौरवपूर्ण ग्रंथ साहित्य-जगत् को प्रदान किया है वह हमारी साहित्यिक निधि है। श्री काणे के इस अंग्रेजी ग्रंथ का यह हिन्दी रूपान्तर हिन्दी के विद्वान् लेखक और प्राध्यापक श्री अर्जुन चौबे काश्यप ने निष्ठा और सफलता के साथ सम्पन्न किया है। लेखक और अनुवादक दोनों ही आज दिवंगत हैं। यदि आज ये जीवित होते तो इस ग्रंथ के हिन्दी प्रकाशन से अवश्य ही तुष्ट और कृतकृत्य होते।

'धर्मशास्त्र का इतिहास' पाँच खंडों में पूर्ण हुआ है। इन पाँचों खण्डों में २,५८५ पृष्ठों की सामग्री प्रस्तुत की गयी है और कुल मिलाकर १२४ अध्याय हैं। इन अध्यायों के अन्तर्गत लेखक ने अधिकाधिक शास्त्रों का अध्ययन और ज्ञान की राशि प्रस्तुत करने की चेष्टा की है। लेखक ने कितना गंभीर अध्ययन और मनन किया है और उसकी दृष्टि कितनी व्यापक और तीव्र रही है, इसकी एक झलक इस 'शब्दानुक्रमणिका' से मिल सकती है।

इस 'शब्दानुक्रमणिका' को भी खंडों के अनुसार पाँच भागों में विभक्त किया गया है। प्रत्येक खंड की 'शब्दानुक्रमणिका' अलग-अलग है। हमने इसमें उन्हीं शब्दों को रखने की चेष्टा की है, जिनके बारे में पाठक कुछ जानना चाहते हैं अथवा जिनका ज्ञान साधारण जन को अपेक्षित है। इसमें बहुत से नाम, ग्रंथ, वर्ण्य विषय एवं अपरिचित शब्द छोड़ दिये गये हैं, केवल इसलिए कि 'शब्दानुक्रमणिका' का कलेवर कागज की महर्घता और दुष्प्राप्यता के इस विकट समय में अधिक बड़ा न हो जाय।

यहाँ यह उल्लेख करना भी, उदाहरणतः, आवश्यक है कि इस ग्रंथ के तीसरे खंड के एक अध्याय में दो हजार से अधिक तीर्थों का उल्लेख और परिचय है। उनके नाम भी छोड़ दिये गये हैं। जिज्ञासु पाठक पुस्तक का अध्ययन करते समय उपयुक्त परिचय और साहित्य यथास्थान देख सकेंगे। इस 'शब्दानुक्रमणिका' में लगभग ७००० शब्द हैं, जब कि ग्रंथ में इससे दूने-तिगुने नये ऐसे वर्ण्य विषय और शब्द हैं, जिनके सम्बन्ध में भारत और भारतीयता से अनुरक्त सभी सम्बद्ध पाठकों या छात्रों को सुपरिचित होना चाहिये। इस 'शब्दानुक्रमणिका' से इस बृहद् ग्रन्थ की महिमा और गरिमा का स्वस्थ परिचय और संकेत उपलब्ध हो सकेगा। ज्ञातव्य है, 'धर्मशास्त्र का इतिहास' के पाँचों खंडों का मूल्य केवल ६२ रुपये है। इस 'शब्दानुक्रमणिका' का मूल्य भी केवल २·५० रुपये है, किन्तु ग्रन्थ का पूरा सेट खरीदने वालों को हम इसे निःशुल्क प्रदान करेंगे।

एक निवेदन और। इस ग्रन्थ के अनुवाद का प्रकाशन एक यज्ञ था, जो सम्पूर्ण हुआ। इसमें अनुवादक श्री अर्जुन चौबे ने जो श्रम-साधना की, वह स्तुत्य रहेगी; साथ ही हमारे सम्पादकीय विभाग के सदस्यों, प्रधान सम्पादक श्री रमाकान्त श्रीवास्तव और सहसम्पादक श्री चिरंजीव शर्मा की तत्परता भी उल्लेखनीय है। इस 'शब्दानुक्रमणिका' को प्रस्तुत करने का अधिकांश श्रेय हिन्दी समिति की सम्पादक श्रीमती डाक्टर ऊषा चौधरी को है, जिन्होंने लगन और तत्परता से इस कार्य का सम्पादन किया है। हम अपने सभी ज्ञाताज्ञात सहयोगियों और सहायक बन्धुओं को समिति की ओर से साधुवाद देना कर्त्तव्य समझते हैं।

हम एक बार पुनः इस 'शब्दानुक्रमणिका' के माध्यम से हिन्दी के पाठकों को और भारतीय संस्कृति के जिज्ञासुओं और छात्रों को विद्वद्वर काणे की यह महत्त्वपूर्ण कृति, जो एक प्रकार से हिन्दू जाति और धर्म का विश्व-कोश है, समर्पित करने में प्रसन्नता का अनुभव करते हैं। हमें विश्वास है, हिन्दी जगत् इस महत्त्वपूर्ण प्रकाशन का अधिकाधिक समादर और स्वागत कर हमारे श्रम को सार्थक करेगा।

(प्रभर)

सचिव, हिन्दी समिति
उत्तर प्रदेश शासन

राजर्षि पुरुषोत्तमदास टण्डन हिन्दी भवन,
लखनऊ,
कार्तिक पूर्णिमा, २०३० वि०

धर्मशास्त्र का इतिहास, भाग–१

[अनुक्रमणिका]

(पृष्ठ १ से ५७६ तक)

धर्मशास्त्र का इतिहास, भाग–२

[अनुक्रमणिका]

(पृष्ठ ५७६ से १०१२ तक)

धर्मशास्त्र का इतिहास, भाग–३

[अनुक्रमणिका]

(पृष्ठ १०१५ से १६४४)

फ

धर्मशास्त्र का इतिहास, भाग–४

[अनुक्रमणिका]

(पृ० १ से ५०८ तक)

ख

ग

म

धर्मशास्त्र का इतिहास, भाग–५

[अनुक्रमणिका]

(पृष्ठ १ से ४३३ तक)

शा

धर्मशास्त्र का इतिहास–५ भाग

शब्दानुक्रमणिका

हिन्दी भवन, महात्मागांधी मार्ग, लखनऊ